दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17-HL-**HL7**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): DIPTI DEO

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.): ____

ई-मेल पता (E-mail address): ____

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): ____

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]: 0 9 7 4 0 6

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): ____

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided into two **SECTIONS**.*

*Candidate has to attemp **FIVE** questions in all.*

*Questions Nos. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, **THREE** are to be attempted choosing at least ONE from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Word limit in questions, if specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.

उत्तर को थोड़ा संक्षिप्त कर सभी आवश्यक प्रश्नों का उत्तर लिखने का प्रयास करें

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 100½

टिप्पणी (Remarks): ____

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

SECTION 'A'

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) यहु तन जालौं मसि करुं, ज्यूं धुंवां जाई सरग्गि।
मति वै राम दया करै, बरसि बुझावै अग्गि।

संदर्भ व प्रसंग: उपरोक्त कविता निर्गुण भक्ति की संत काव्य-धारा के हस्ताक्षर कबीर दास की वाणी के संकलन 'कबीर ग्रन्थावली' से ली गयी है। इसमे कवि कठोर यौगिक साधना के माध्यम से परमतत्व की उपलब्धि का प्रयास कर रहा है।

व्याख्या: कवि का मानना है कि शरीर की कठोर साधना से परम तत्व अर्थात् ब्रह्म प्रसन्न होता है और इसकी कृपा के माध्यम से जीव इस जीवन-मरण के चक्र से मुक्त हो अपने चरम लक्ष्य को उपलब्ध कर पाता है।

काव्यगत सौंदर्य:

1. कबीर पर नाथ पंथियों के हठयोग का प्रभाव था। इन पंक्तियों में यह परिलक्षित हो रहा है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

2- उपमेय-उपमान विधान अर्थ की व्यंजकता को और प्रभावपूर्ण बना रहा है।
[तन → माटि,]

3- जीव अपने ब्रह्म से एकत्व के लिए व्याकुल है। इस व्याकुलता के लिए अग्नि (आगि) प्रतीक गढ़ा गया है।

4- भाषा में अपभ्रंश-अवहट्ट का प्रभाव
अग्नि → आगि, स्वर्ग – सरग्गि

5- दोहा छंद है।

6- कठोर शारीरिक साधना की यह परम्परा निराला की राम की शक्तिपूजा में भी दिखती है जहाँ राम 'दृढ़ आराधन' के माध्यम से विजय प्राप्त करना चाहते हैं।

7- वर्तमान में योग लोकप्रिय हो रहा है जो इसी परम्परा से संबद्ध है।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) उर में माखनचोर गड़े।
अब कैसेहू निकसत नहिं, ऊधो ! तिरछे है जो अड़े।।
जदपि अहीर जसोदानंदन तदपि न जात छँड़े।
वहाँ बने जदुबंस महाकुल हमहिं न लगत बड़े।।
को बसुदेव, देवकी है को, ना जानैं औ बूझै।
सूर स्यामसुन्दर बिनु देखे और न कोऊ सूझै।।

संदर्भ व प्रसंग: प्रस्तुत पद श्रृंगार व वात्सल्य के सम्राट महाकवि सूरदास के 'सूरसागर' रचना से लिया गया है। भ्रमरगीत प्रसंग के माध्यम से गोपियाँ अपने कृष्ण-प्रेम को व्यक्त कर रही हैं।

व्याख्या: गोपियाँ उद्धव से कहती हैं कि कृष्ण उनके हृदय रूपी कक्ष में इस प्रकार तिरछे होकर फंस गये हैं कि वे निकाले निकलते नहीं। वे उलाहना देते हुये कहती हैं कि हालांकि वे मथुरा जाकर यदुवंश के महाकुल से जुड़ गये हैं लेकिन हमें अभी वे अपने सखा की भाँति ही समकक्ष लगते हैं। वे कृष्ण के माता-पिता –वासुदेव- देवकी–को भी न पहचानने का उलाहना देती हैं और

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कहती हैं कि हे उद्धव! अब इन नयनों को कृष्ण के दर्शन से ही सुख मिल सकता है।

काव्यगत सौंदर्य:

1. उपालम्भ काव्य का अप्रतिम उदाहरण है।
2. गोपियाँ हृदय की भाव-प्रेरित वक्रता के माध्यम से सगुण भक्ति के लिए ठोस तर्काधार भी दे रही हैं। (तिरछे ह्वै जो अरे)
3. गोपियों का विरह कृष्ण के मथुरा-नगर जाने से उत्पन्न हुआ है। इन पंक्तियों के माध्यम से वे अभिजात्य-नागर संस्कृति पर भी व्यंग्य कर रही हैं।
4. भाषा की इसी सरसता के कारण आचार्य शुक्ल ने 'सूर का नाम बराबर लिए जाने' की घोषणा की थी।
5. पद स्वाभाविक रूप से गेयता धारण करता है।
6. अमूर्त को मूर्त बनाने के लिए प्रतीक ('उर में गड़े') का सुंदर प्रयोग हुआ है।

अच्छा

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) दादुर मोर कोकिला पीऊ। करहिं बेझ घट रहै न जोऊ।
पुख नछत्र सिर ऊपर आवा। हौं बिनु नाँह मंदिर को छावा।
जिन्ह घर कंता ते सुखी तिन्ह गारौ तिन्ह गर्व।
कंत पियारा बाहिरें हम सुख भूला सर्व॥

संदर्भ व प्रसंग : उपरोक्त पंक्तियाँ प्रेम-काव्य के अमिट हस्ताक्षर 'मलिक मुहम्मद जायसी' की रचना 'पद्मावत' के नागमती वियोग खण्ड से ली गयी है। इनमें नागमती के रत्नसेन के सिंहलदीप प्रवसन के कारण उत्पन्न वियोग का वर्णन हुआ है।

व्याख्या : जायसी कहते हैं कि 'पुष' नक्षत्र के आने के साथ ही विभिन्न पशु-पक्षी (मेढक, मोर, कोयल) अपने स्वर आरंभ करते हैं और उनकी आवाज नागमती के विरह के दशा को और बढ़ाती है। नागमती कहती है कि उसका पति घर नहीं है और इस कठोर परिस्थिति में उसकी रक्षा कौन करेगा।

नागमती कहती है कि वही नारी सुखी है जिसका प्रिय उसके समीप हो और उसका जीवन तो प्रिय के न होने के कारण स्वर्ग को विस्मृत कर चुका है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

भावगत सौंदर्य :

1. नागमती के गार्हस्थिक प्रेम एवं उसमें उत्पन्न विरह के कारण आचार्य शुक्ल ने जायसी की प्रशंसा की है।

2. मध्यकालीन परिस्थितियों में नारी की परवशता भी इस पंक्ति में दृष्टिगोचर है जहाँ वह न केवल प्रिय के वियोग से ग्रस्त है बल्कि भौतिक परिस्थितियाँ भी रत्नसेन के जाने से प्रतिकूल हो गयी है।

3. लोक-भाषा अवधी के इसी माधुर्य के कारण आचार्य शुक्ल ने जायसी की भाषा की प्रशंसा की है।

4. जायसी के काव्य में लोकतत्व सर्वत्र विद्यमान रहता है। [दादुर – मेंढ़क]

5. नागमती के विरह वर्णन हेतु 'बारहमासा' काव्य रूढ़ि का प्रयोग हुआ है।

6. चौपाई व दोहा छंद का सुंदर प्रयोग हुआ है।

6/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) नैंक हँसो ही बानि तजि, लख्यौ मुहुँ नीठि।
चौका-चमकनि-चौंध मैं परति चौंधि सी डीठि।।

संदर्भ एवं प्रसंग: उपरोक्त दोहा रीतिकालीन 'रीतिकाव्य' के कवि 'बिहारीलाल' की रचना 'बिहारी सतसई' से लिया गया है। इस दोहे में नायिका के मुख का सौंदर्य चित्रित किया गया है।

व्याख्या: कवि का चित्र कुछ इस प्रकार है कि नायिका हँसती है और नायक उसकी स्मिति से फूटी प्रकाश किरण से चौंधिया जाता है और उसकी दृष्टि स्पष्ट नहीं रहती।

सौंदर्य:
1. बिहारी दरबारी माहौल के रचनाकार है जहाँ कविता अपने सौंदर्य वर्णन के माध्यम से काव्य रसिकों को चमत्कृत करती है।
2. दोहे को पढ़ना एक चलचित्र देखने की भाँति है जहाँ कई बिंबों की श्रृंखला निर्मित की गयी है। [हँसना → देखना → चौंधिया जाना।]

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

3. ध्वनियों की पुनरावृत्ति ['च'] से अर्थ गांभीर्य और बढ़ जा रहा है।

4. ब्रज की चरम कलात्मक क्षमता का परिचय इस दोहे में पाया जा सकता है।

5. दोहे छंद में इतनी अर्थ गांभीर्यता के कारण ही 'गागर में सागर' की उपमा दी गयी।

बहुत अच्छा

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) अरे भगाओ इस बालक को
होगा यह भारी उत्पाती
जुलुम मिटाएंगे धरती से
इसके साथी और संघाती
'यह उन सबका लीडर होगा
नाम छपेगा अख़बारों में
बड़े-बड़े मिलने आएंगे
लद-लदकर मोटर-कारों में

संदर्भ एवं प्रसंग : दी गयी कविता का अंश जनकवि नागार्जुन की हृदय को उद्वेलित कर देने वाली कविता 'हरिजन गाथा' से लिया गया है। इन पंक्तियों में नागार्जुन बाबा के माध्यम से दलित बस्ती में नवजात बालक के बारे में भविष्यवाणी कर रहे हैं।

व्याख्या : बाबा कहते हैं कि नवजात बालक अत्यंत संभावनाशील नायक है। इसे तत्काल इन परिस्थितियों से दूर किया जाए जो क्रान्ति को दबा सकती है। यह बालक भविष्य में क्रान्ति का नेतृत्व कर्ता होगा और सभी बुद्धिजीवी व अन्य नेतृत्वकर्ता इससे संपर्क स्थापित करेंगे।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भावगत सौन्दर्य :

1. बिहार के 'बेलछी हत्याकाण्ड' से उद्वेलित नागार्जुन का संवेदनशील हृदय अब दलितों के मध्य उभरती क्रांति चेतना को देखना चाहते हैं।

2. नागार्जुन क्रांति के स्वरूप की भी व्याख्या करते है जो हिंसा-अहिंसा सभी अस्त्रों से लैस होगी। ['जुलुम मिटायेंगे, उत्पाती']

3. मार्क्सवाद का प्रभाव क्रांति के विचार पर दिखता हो

4. भाषा अत्यंत सीधी-सपाट किन्तु भावों की व्यंजना मे चरम सफल।

5. आंतरिक लय।

6. मुक्त छंद।

बहुत अच्छा।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'अपनी मूल प्रकृति में पद्मावत एक त्रासदी है।' आप इस मत से कहाँ तक सहमत हैं? तार्किक उत्तर दीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सूफी प्रेमाख्यान काव्य के रूप में पद्मावत भक्तिकालीन प्रबंध काव्यों मे अद्वितीय उपलब्धि है। साहित्यिक विमर्शों में इसमें निहित संभावनाशीलता के कारण आज भी विवाद का विषय बनी हुयी है। इन्हीं विवादों में एक विवाद यह है कि ~~क्या~~ क्या पद्मावत ट्रेजेडी है या नही? और है तो किसकी?

वस्तुत: ट्रेजेडी एक पाश्चात्य साहित्यिक रूढ़ि है जिसमें नायक या नायिका किसी 'उदात्त संघर्ष' मे एक 'हैमर्शिया' के कारण मृत्यु को प्राप्त होते है या पराजित होते है। इसके माध्यम से पाठक या भावक का विरेचन होता है और उसके नकारात्मक भाव निकल जाते है तथा मन-मस्तिष्क का परिष्कार होता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस ढाँचे मे रखकर परीक्षण किया जाए तो 'पद्मावत' का अंत त्रासद होता है जहाँ रत्नसेन भी मारा जाता है और 'नागमती' भी 'सती' हो जाती है।

ट्रेजेडी के शास्त्रीय प्रतिमानों पर भी परीक्षण करने पर कमोबेश सभी चरण कुछ समायोजनो के साथ इस प्रबंध काव्य के कथा ढाँचे में मिल जाते हैं। किन्तु प्रश्न यह है कि त्रासद अंत किसका है?

रत्नसेन की दृष्टि से देखे तो वह मृत्यु को अवश्य प्राप्त होता है किन्तु किसी उदात्त संघर्ष के लिए नहीं। उसका सिंहल द्वीप मात्र पद्मिनी नारियो के आकर्षण में चले जाना किसी भी दृष्टि से उदात्त उद्देश्य नहीं माना जा सकता। और तो और, वह बार-बार पद्मिनी के प्रभाव से मूर्छित होता है

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जो उसे ट्रेजेडी के उदात्त नायक से दूर करती चली जाती है।

इस बिंदु पर रत्नसेन कहीं से उदात्त नहीं ठहरता। हाँ, सिंहल द्वीप से वापस आकर राज्य की सुरक्षा के लिए षड्यंत्र में मारा जाना एक दृष्टि से वीरता है, किन्तु उसकी मृत्यु त्रासद प्रभाव उत्पन्न नहीं कर पाती।

दूसरा चरित्र है नागमती। यह पूरे जीवन एकनिष्ठ गार्हस्थिक प्रेम के प्रति प्रतिबद्ध है। नागमती अपने प्रेम के लिए संघर्ष भी करती है। प्रेमी रत्नसेन के पद्मिनी के लिए सिंहल द्वीप चले जाने पर भी एकनिष्ठता बनाए रखती है। इस दृष्टि से उसमें औदात्य का स्वाभाविक सृजन होता है। नागमती का रत्नसेन की मृत्यु और अलाउद्दीन के आक्रमण तथा किले में प्रवेश के कारण 'जौहर' या

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

सती होना एक गहरा त्रासद प्रभाव उत्पन्न करता है। इसके माध्यम से मानवता की युद्ध के समस्त त्रासदी पाठक / भावक को विरेचन की स्थिति में पहुँचा देती है।

अलाउद्दीन ~~पद्मावत~~ नागमती की भस्म शरीर की राख लेकर बैठा हुआ है और जायसी कहते हैं

" लीन्ह उठाई छार एक मूठी
दीन्ह उड़ाई पृथ्वी झूठी।"

अतः हम देखते हैं कि पद्मावत त्रासदी (ट्रेजेडी) के ढाँचे में कुछेक संशोधनों/~~के~~ विचलनों के साथ 'फिट' बैठती है और नागमती के माध्यम से मानवता की त्रासदी की गाथा है।

अच्छा

$11\frac{1}{2}$ / 20

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) बिहारी की बिंब-योजना पर प्रकाश डालिये।

कविता को पाठक की ऐंद्रिक अनुभूति के स्तर तक ले जाने के साधन के रूप में बिंब-योजना काव्य की अप्रतिम शक्ति है। बिहारी जैसे समर्थ रचनाकारों ने इसका कुशल प्रयोग कर न केवल अपने काव्य को सफल बनाया अपितु हिन्दी साहित्य के मान को भी बढ़ाया है। प्रश्न यह है कि बिहारी के काव्य में बिंबों की सघनता क्यों है और किन-किन स्तरों पर व्यक्त हुयी है?

दरअसल, बिहारी दरबारी माहौल के कवि है जहाँ मध्यम स्तर के मानसिक एवं साहित्यिक रुचियों के काव्य रसिकों के समक्ष कविता सुनाना ही कवि का लक्ष्य था। ऐसे श्रोताओं और पाठकों के समक्ष विषय भी अत्यन्त सजगता से चुनना बिहारी की परवशता थी।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इन परिस्थितियों में बिहारी प्रेम और दैहिक सौंदर्य को कविता के विषय के रूप में चुनते है। यही कारण है कि बिंबों की प्रधानता है।

प्रेम के मुख्यतः अनुभावों के कवि बिहारी हैं। वे 'बतरस लालच लाल की मुरली धरी लुकाय' के प्रसंग मे पूरा चलचित्र निर्मित कर देते है।
'सौहे करे, भौंहनु हँसे, दैन कहे नट जाए'

इसके अतिरिक्त नायिका के सौंदर्य के वर्णन मे भी रोदिक अनुभूति आवश्यक थी एक उदाहरण द्रष्टव्य है
"सहज सेत-पँचतोरिया पहिरत अति छवि होत
जल चादर केदीप लौं जगमगाति तन जोत।"

उपरोक्त उदाहरण में पाँच तोले की साड़ी पहनी नायिका का शरीर महीन कपड़े के भीतर जलचादर के दीप की भाँति जगमगा रहा है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, बेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अत: स्पष्ट है कि बिहारी की बिंब योजना उनके काव्य की परिस्थितियों के साथ उनके कुशल प्रयोग की क्षमता का परिचायक थी।

बहुत अच्छा

9/15

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) पद्मावत में नागमती के विरह-वर्णन की विशिष्टताओं पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रेम के संयोग के उत्सवपूर्ण क्षणों के साथ ही संवेदनशील कवि-हृदयों के विरह के मार्मिक क्षणों ने भी उद्वेलित किया है। इन्हीं क्षणों की मार्मिकता को पहचान, मलिक मुहम्मद जायसी ने अपने लोक हृदय तक पहुँच की क्षमता के माध्यम से नागमती के विरह वर्णन को हिन्दी साहित्य की अद्वितीय उपलब्धि बना दिया है।

नागमती के विरह वर्णन की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशेषता उसका साधारणीकरण है। नागमती यूँ तो कहने को रानी है किन्तु विरह में वह अपना रानीपन बिलकुल भूल गयी है। उसके विरह वर्णन में राजमहल की वस्तुओं की 'प्रदर्शनी' या 'सूची' नहीं लगायी गयी है वरन इसे भी 'जेठ जरै जग वहै लुआरा / उठे बवंडर धिकै

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पहारा' से विरह का दर्द महसूस होता है।

नागमती के विरह में उसकी गार्हस्थिक चेतना उसके विरह को सौंदर्यपूर्ण बना देती है। यह विरह काम के आवेग से न उत्पन्न होकर सहज साहचर्य एवं भिन्न प्रतिदिन की आवश्यकता के न होने से उत्पन्न हुआ है। जायसी के इसी कौशल के कारण आचार्य शुक्ल ने 'हिन्दू गृहणी की व्यथा-कथा' कहकर प्रशंसा की है।

जायसी ने अवध क्षेत्र के लोक तत्व की बखूबी पहचान के प्रमाण नागमती के विरह वर्णन में दिया है। बारहमासा वर्णन के माध्यम से प्रकृति के तत्व उद्दीपन विभाव के रूप में आए हैं। गोपियाँ जहाँ जहाँ 'मधुबन' पर संवेदन आरोप का उलाहना देती

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

है वहीं नागमती 'काग' से सहानुभूति चाहती है। उदा०
"पिउ सो कहेउ संदेसड़ा है भौंरा है काग
सो धनि विरहे जरि मुई ओहिक धुआँ-मोहि लाग।"

नागमती का वर्णन कहीं-कहीं ऊहात्मक हो गया है। इसका कारण मुख्यत: फारसी प्रभाव माना गया है। 'स्फत के धारा' के माध्यम से ऊहात्मक प्रभाव उत्पन्न होता है।

अत: उपरोक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि नागमती का विरह-वर्णन जायसी की लोक-तत्व के पहचान तथा कुशल काव्य कला का मिश्रण है साधारणीकरण तथा प्रकृति चित्रों के कारण यह अद्वितीय बन पड़ा है।

अच्छा

8½/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

4. (क) बिहारी की बहुज्ञता पर विचार कीजिये।

प्रतिभा 'विद्या' की सीमाओं से बद्ध नहीं रह सकती। गुरुदेव रविन्द्रनाथ टैगोर इसके ज्वलंत उदाहरण हैं। इसी प्रकार बिहारी भी साहित्य, चित्रकला समाज, राजनीति, ज्योतिष इत्यादि क्षेत्रों के साथ संगीत के भी ज्ञाता थे।

बिहारी की बहुज्ञता के आयामों का परीक्षण किया जाए तो उनकी कविता ही एकमात्र सामग्री उपलब्ध कराती है। बिहारी सतसई को 'गागर में सागर' कहे जाने के पीछे यही कारण था।

सर्वप्रथम एक कुशल चित्रकार की भाँति बिहारी रंगों के संयोजन की कुशल-प्रवीण जानकारी रखते हैं। नायिका के यौवन एवं उसके कपड़े के रंग के संयोजन से 'ताफता' रंग की व्युत्पत्ति इसका प्रमाण है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बिहारी संगीत में भी प्रवीण थे। वे सभी कलाओं का उद्देश्य रस को मानते थे। उनका दोहा द्रष्टव्य है -

"तंत्रीनाद कवित रस सरस राग रति रंग
अनबूडे बूडे तिरे जे बूडे सब अंग।"

राजनीति के क्षेत्र से कटे होने का आरोप बिहारी की कविता पर लगता है। किन्तु एक गहन राजनीतिक चिंतक की भाँति वे सवाई राजा जय सिंह को उपदेश देते हुए कहते हैं -

"स्वारथ सुकृत न श्रम वृथा × × ×।
देख पराये पानि परि तू पच्छीनु न मारु।"

इसके अतिरिक्त बिहारी ज्योतिष का भी ज्ञान रखते थे। यौन व्यभिचारों पर व्यंग्य करते हुए वे कहते हैं कि
चितु पितु मारग जोग गुनि भयो भये सुत सोग
फिर हुलस्यो हुलस्यो गुनि समझे जारज जोग।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बहुज्ञता का एक अन्य आयाम बिहारी की सामाजिक चेतना है। दरबारी माहौल में रहते हुए भी बिहारी समाज एवं घरों की चारदीवारी में होने वाली समस्याओं को भी देख पाते है। संयुक्त परिवार में एक स्त्री की असुरक्षा (अपने देवर के प्रति) को व्यंजित करते हुए कहते है -
"कहति न देवर की कुमति, कुलतिय कलह डराति
पंजर गत मंजर भई सुख लौं सुकतिजाति।"

अतः स्पष्ट है कि बिहारी की बहुज्ञता उनके कवि व्यक्तित्व को न केवल समृद्ध की है वरन उसे हिन्दी साहित्य में एक चरम ऐतिहासिक महत्व प्रदान किया है।

बहुत अच्छा

12/20

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A²

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'B'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजिये: 10 × 5 = 50

(क) मैं प्रेम को संदेह से ऊपर समझती हूँ। वह देह की वस्तु नहीं, आत्मा की वस्तु है। संदेह का वहाँ जरा भी स्थान नहीं और हिंसा तो संदेह का ही परिणाम है। वह संपूर्ण आत्मसमर्पण है। उसके मंदिर में तुम परीक्षक बनकर नहीं, उपासक बनकर ही वरदान पा सकते हो।

संदर्भ व प्रसंग: उपरोक्त पंक्तियाँ उपन्यासकार 'प्रेमचंद' की चरम सफल एवं अंतिम कृति 'गोदान' उपन्यास से ली गयी हैं जिसमे मिस मालती, मि० मेहता से प्रेम के संबंध में अपना विचार दे रही हैं।

व्याख्या: मिस मालती का मानना है कि प्रेम शारीरिक ही नहीं है। प्रेम में दो आत्माओं की पारस्परिक अनुभूति होती है। जब प्रेम में पारस्परिक संदेह हो जाए तो संबंध में हिंसा का भाव आता है। प्रेम अपने प्रिय के समस्त पूर्ण आत्मसमर्पण की मांग करता है। यदि व्यक्ति संदेह ग्रस्त होकर प्रिय की परीक्षा लेता है, तो वास्तविक प्रेम की उपलब्धि संभव नहीं।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भाव सौंदर्य :

1. मिस मालती के माध्यम से प्रेमचंद ने अपना प्रेम दर्शन प्रस्तुत किया है।
2. प्रेमचन्द आदर्शवाद एवं छायावाद के प्रभाव से पूर्णतः मुक्त नहीं हो सके है।
3. छायावाद में भी जयशंकर प्रसाद इसी प्रेमदृष्टि को धारण करते थे। उनके नारी पात्र देवसेना एव श्रद्धा इन्ही विशेषताओं से युक्त थे।
4. प्रेम जैसी अमूर्त भावना को 'मंदिर' के माध्यम से मूर्त बनाया गया है।
5. भाषा तत्समी है जो मिस. मालती के चरित्र के अनुसार है।

अच्छा 6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) संभवतः पहचानती नहीं हो और न पहचानना ही स्वाभाविक है क्योंकि मैं वह व्यक्ति नहीं हूँ जिसे तुम पहचानती रही हो। दूसरा व्यक्ति हूँ, और सच कहूँ तो वह व्यक्ति हूँ जिसे मैं स्वयं नहीं पहचानता हूँ।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

संदर्भ व प्रसंग: उपरोक्त गद्यांश नये नाटककार 'मोहन राकेश' के नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' से लिया गया है। इन पंक्तियों में कालिदास नाटक के तीसरे अंक में जब कश्मीर से वापस आता है तो मल्लिका के समक्ष उपस्थित है।

व्याख्या: कालिदास मल्लिका के विस्मय के प्रत्युत्तर में कह रहा है कि मैं वह व्यक्ति वास्तव में नहीं हूँ जो मैं पूर्व में था और जिसे तुम पहचानती थी। वस्तुतः कालिदास गहरे व्यक्तित्व विभाजन का शिकार है जो अपने 'स्व' से कटकर उसे धरातल पर प्रविष्ट हुआ था जो उसकी मूल वृत्ति के अनुसार न थी। इसी कारण वह विसंगति से ग्रस्त है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

सौंदर्य :

1- इन पंक्तियों में सार्त्र के अस्तित्ववादी दर्शन का प्रभाव स्पष्ट होता है।

2. कालिदास अपनी स्वाभाविक कवि-वृत्ति को छोड़ 'राजनीति' के क्षेत्र में प्रविष्ट हो गहरे व्यक्तित्व विभाजन से ग्रस्त है।

3. 'विसंगति बोध' कालिदास में उत्पन्न हो गया है।

4. भाषा अत्यंत प्रभावशाली है जिसमें आन्तरिक लय है। विसंगति की सफल अभिव्यक्ति में सहायक रही है।

5. कालिदास का राजनीतिक क्षेत्र से वापस लौटना वस्तुतः उसके पुनः 'स्व' की खोज की उद्घोषणा है।

6. नाटक के संवाद के द्वारा से अत्यंत प्रभावशाली वाक्य विधान है।

बहुत अच्छा

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) पर मुझसे कुछ नहीं बोला जाता। बस मेरी बाँहों की जकड़ कसती जाती है, कसती जाती है। रजनीगन्धा की महक धीरे-धीरे तन-मन पर छा जाती है। तभी मैं अपने भाल पर संजय के अधरों का स्पर्श महसूस करती हूँ, और मुझे लगता है, यह स्पर्श, यह सुख, यह क्षण ही सत्य है, वह सब झूठ था, मिथ्या था, भ्रम था।

संदर्भ व प्रसंग: उपरोक्त पंक्तियाँ नयी कहानियों के संकलन एक दुनियाँ समानान्तर (सम्पादक राजेन्द्र यादव) में संकलित कहानी यही सच है से ली गयी हैं। इन पंक्तियों में लेखिका मन्नू भण्डारी ने स्त्री-पुरुष संबंधों की सहज अभिव्यक्ति की है।

व्याख्या: नायिका अपने प्रेमी संजय के स्पर्श एवं शारीरिक संपर्कों की स्मृति में डूबकर उस सुखद क्षण का अनुभव कर रही है और उसे वास्तविक सुख बताती है।

टिप्पणि:

1. नवलेखन के दौर में नारीवादी लेखिकाओं ने यौन नैतिकता पर प्रश्न उठाने की

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

साथ यौन-संबंधों की अकुंठ अभिव्यक्ति की है।

2. इन पंक्तियों में भी अभिव्यक्ति अकुंठ है किन्तु उसी स्तर की सहजता भी है।

3. नारीवादी विचारकों के आलोचकों ने इनकी यौन नैतिकता पर प्रश्न भी उठाए हैं।

4. मध्यवर्ग और महिला शिक्षा ने वे परिस्थितियाँ उत्पन्न की जहाँ नारियाँ स्वतंत्र अस्तित्व के लिए छटपटा रही थी।

बहुत अच्छा

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) जब आप याद करेंगे कि मुगल बादशाहों के ज़माने में इन कोल किरातों का आखेट होता था और जो पकड़े जाते थे, वे काबुल में बेच दिए जाते थे और ब्रिटिश साम्राज्यवाद के शासन में लाखों की तादाद में उन्हें जरायम पेशा करार दिया गया, तब तुलसीदास की प्रगतिशीलता समझ में आएगी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

संदर्भ व प्रसंग: उपरोक्त पंक्तियाँ प्रखर मार्क्सवादी आलोचक डा॰ रामविलास शर्मा की व्यावहारिक आलोचनात्मक निबंध 'तुलसी साहित्य के सामंत विरोधी मूल्य' से ली गयी हैं, जहाँ डा॰ शर्मा तुलसी दास को प्रगतिशील सिद्ध कर रहे हैं।

व्याख्या: तुलसी को दलित विरोधी सिद्ध करने वाले आक्षेप का जवाब देते हुए डा॰ शर्मा कहते हैं कि मध्यकालीन परिस्थितियों में भी आदिम जनजातियों के साथ जो बर्ताव होता था वह आधुनिक माने जाने वाले ब्रिटिश साम्राज्य में भी चला आ रहा था। तुलसी की प्रगतिशीलता को इस संदर्भ से काट कर मूल्यांकित नहीं किया जा सकता।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

सौंदर्य :

1. आचार्य डा॰ रामविलास शर्मा तुलसी दास को प्रगतिशील सिद्ध करने के लिए ऐतिहासिक सामाजिक उपादान जुटा रहे हैं. इन पंक्तियों में

2- प्रगतिशीलता कोई काल सापेक्ष धारणा डा॰ शर्मा नहीं मानते। उनके अनुसार यह प्रवृत्ति सूचक है।

3- तुलसीदास जी को इन आक्षेपों से आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने भी बचाया था।

4. निबंध की भाषा आक्रामक सी प्रतीत होने लगती है।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ड़) जब समस्त हिन्दू जाति की एक वैदिक सम्प्रदाय न रही तो वही मसल चरितार्थ हुई कि "एक नारि जब दो से फँसी जैसे सत्तर वैसे अस्सी"। हमारी एक हिन्दू जाति के असंख्य टुकड़े होते-होते यहाँ तक खण्ड हुए कि अब तक नये-नये धर्म और मत-प्रवर्त्तक होते ही जाते हैं।

संदर्भ व प्रसंग: उपरोक्त पंक्तियाँ अमृत राय द्वारा संपादित ललित निबंधों के संकलन 'निबंध निलय' से ली गयीं है। इस निबंध के रचनाकार पं बाल कृष्ण भट्ट है।

व्याख्या: इन पंक्तियों में निबंधकार हिन्दू एकता की बिखरी हुयी स्थितियों से चिंतित है और उसके विभिन्न मतवादों एवं संप्रदायवादों में बंट जाने के कारण इतना व्यथित है कि उपमा देने में मर्यादा की भी सीमा बांध गया है।

भावगत विशेषताए:

1. यह निबंध नवजागरण के दौर का है जब भारत को एक सांस्कृतिक इकाई के रूप में गठित करने के लिए

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'हिन्दुत्व' को एक माध्यम माना गया

2. निबंधकार 'आर्य समाज के शुद्धिकरण एवं 'वेदो की ओर लौटो' से वैचारिक रूप से प्रभावित है

3- आगे चलकर यही 'हिन्दुत्व' राष्ट्रीय एकता के लिए समस्या का कारण बना

4- नारीवादी चिंतकों ने इस पर गंभीर आरोप लगाए हैं
"एक नारि जब दो से फंसी.... "

5- खड़ी बोली गद्य की दृष्टि से आरंभिक काल होते हुए भी इन पंक्तियों की भाषा सुगठित है

5 1/2 / 10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation